**موضوع الخطبة** :خصائص صلاة الجمعة وفضائلها

**الخطيب** : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

**لغة الترجمة** : الهندية

المترجم :فيض الرحمن تيمى (@Ghiras_4T)

# शीर्षक:

## जुमा की नमाज़ की विशेषताएं एवं महत्व

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

(يَا أَيُّهَ الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُون).

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما).

प्रशंसाओं के पश्चात!
सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है।दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअ़त(नवाचार)है और प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ऐ मुसलमानो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भ्य अपने दिलों में पैदा करो।जानलो कि अल्लाह तआ़ला अपने जीवों का पालनहार है,उसका एक दृश्य यह है कि वह जिस जीव को चाहता है सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान करता है,चाहे वे व्यक्तियां हों,स्थानें हों,समय हों अथवा प्रार्थनाएं हों।इसके पीछे अल्लाह की निती होती है जिसे वही जानता है,अल्लाह का कथन है:

(وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَار)

अर्थातःऔर आपका रब जो चाहता है पैदा करता है और जिसे चाहता है उसका चयन करलेता है।और निसंदेह अल्लाह तआ़ला नमाज़ों में जुमा की नमाज़ का चयन किया और उसे कुछ विशेषताएं प्रदान की हैं,उसके लिए कुछ सुन्नतों और मुसतह़ब्बों को अनीवार्य कर दिया है,जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण सुन्नतों और मुसतह़ब्बों का उल्लेख निम्नलिखित में किया जा रहा है:

1.जुमा की नमाज़ इस्लाम के महत्वपूर्ण फरज़ों और मुसलमानों के महत्वपूर्ण सभाओं में से एक है।

2.जुमा की नमाज़ की सुन्नतों में से उसके लिए स्नान करना है और यह अत्यंत बलपूर्वक आदेश है।इसी प्रकार इत्र लगाना,दातुन करना और सुंदर वस्त्र पहन्न भी जुमा की सन्नतों में से हैं।अबू दरदा रजीअल्लाहु अंहु की ह़दीस में रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"जिस व्यक्ति ने जुमा के दिन स्नान किया,फिर सुंदर वस्त्र पहना,और यदि प्राप्त हुआ तो इत्र भी लगाया,फिर संतुष्टि के साथ जुमा के लिए निकल पड़ा और किसी के साथ छेड़छाड़ नहीं किया और न ही किसी को कष्ट पहुंचाया,फिर जितना नसीब में था उसने सुन्नत पढ़ी,फिर इमाम के आने का प्रतिक्षा किया तो दो जुमा के मध्य उसके किए हुए पाप क्षमा कर दिए जाते हैं"।[1]

स्लमान फारसी रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है वह फरमाते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"जो व्यक्ति जुमा के दिन स्नान करे और जितना संभ्व हो स्वछता का पालन करके तेल लगाए अथवा अपने घर की इत्र लगाकर जुमा के लिए निकले और दो व्यक्तियों के मध्य भेद न करे(जो मस्जिद में बैठे हों) फिर जितनी नमाज़ें उसके भाग्य में हो उतनो पढ़े और इमाम उपदेश देने लगे तो वह खामोश रहे,ऐसे व्यक्ति के वे पाप जो इस जुमा से दूसरे जुमा के मध्य हों,सब क्षमा कर दिए जाएंगे"[2]

---

[1] इसे अहमद 5/420 ने रिवायत किया है और ज़ादुलमआ़द के शोधकर्ताओं ने इसे हसन कहा है।

[2] इस ह़दीस को इमाम बोखारी ने कितबुलजुमा के अंदर"जुमा के लिए तेल लगाना के अध्याय में"और "जुमा के दिन दो लोगों के मध्य भैद न करने के अध्याय में"वर्णित किया है।

अबू सईद खुदरी रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि में रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गवाही देता हूं कि उन्होंने फरमाया:"प्रत्येक वयस्क व्यक्ति पर जुमा के दिन स्नान करना अनिवार्य है और यह कि दातुन करे और यदि इत्र लगाना संभ्व हो तो उसे भी लगाए "[3]

3.जुमा की नमाज़ की एक सुन्नत यह भी है कि उसके लिए कुछ विशेष वस्त्र रखा जाए,इसका प्रमाण आयशा रज़ीअल्लाहु अंहा की एक ह़दीस है: पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जुमा के दिन लोगों को संबोधित किया तो आपने देखा कि उन्होंने (दैनिक उपयोग की) चादरें ओढ़ रखी हैं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"किया ह़रज है कि तुम में से किसी व्यक्ति के पास संभव हो तो वह दैनिक उपयोग के काम काज के वस्त्र के अतिरिक्त जुमा के लिए विशेष रूप से वस्त्र त्यार करले"[4] उपरोक्त ह़दीसों से ज्ञात होता है कि जुमा की नमाज़ के लिए सबसे सुंदर वस्त्र पहन्ने पर प्रोत्साहित किया गया है।

4.जुमा की नमाज़ की मुसतहब्बों में से यह भी है कि मस्जिद को इत्र से सुगंधित किया जाए,उ़मर बिन खत्ताब रज़ीअल्लाहु अंहु ने आदेश दिया कि दोपहर के समय प्रत्येक जुमा को मस्जिदे नबवी के अंदर ऊर से सुगंधित किया जाए।[5]

5.जुमा की नमाज़ की एक सन्नत यह भी है कि उसके लिए जलदी की जाए और पैदल चल कर जाया जाए और यह श्रेष्ठतर सवारी है और पुण्य के मामले में इन दानों के मध्य कोई प्रतियोगिता ही नहीं है।औस बिन और रज़ीअल्लाहु अंहु फरमाते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"जिसने जुमा के दिन स्नान किया और स्नान कराया,सवेरे पहुंचा,शुरू से उपदेश में शामिल रहा,इमाम के निकट बैठा और पूरे ध्यान से उपदेश सुना और खामोश रहा तो उसके प्रत्येक क़दम के बदले उसे एक वर्ष के रोज़े और एक वर्ष के क़्याम का पुण्य मिलेगा" ।[6]

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन(غَسَّلَ ) "स्नान कराया"का अर्थ है:"अपनी पत्नी से संभोग किया"जैसा कि इसके व्याखया इमाम अह़मद ने की है।और इसकी निती भी स्पष्ठ है,वह यह कि संभोग से मनुष्य की आतमा को संतुष्टि प्राप्त होती है जो कि नमाज़ में

---

[3] बोख़ारी:880,मुस्लिम:846।

[4] अबूदाउूद:1078,इब्ने माजा:1095।

5 अबू याला ने अलमुसनद:190 में इसको रिवायत किया है और इसकी सनद को इब्ने कसीर रह़ीमहुल्लाहु ने ह़सन कहा है जैसा कि अल्बानी रहीमहुल्लाहु की पुस्तक"अलसमर अलमुसाब:"2/586 में है।

[6] तिरमीज़ी:456 ने इसको रिवायत किया है और अल्बानी रह़ीमहुल्लाहु ने इसे सह़ीह़ कहा है।

मोसल्ला के लिए संतुष्ठि का कारण है।एक कथन यह भी है कि:" غَسَلَ واغْتَسَلَ "अर्थात अपने सर को धोया और स्नान किया,क्योंकि लोग सरों में तेल लगाते हैं इसी लिए स्नान करने से पूर्व सर को धोने पर प्रोतसाहन किया गया है।जुमा की नमाज़ के लिए जलदी पहुंचने के महत्व के विष्य में एक और ह़दीस है जिसको अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु ने रिवायत किया है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"जो व्यक्ति जुमा के दिन जनाबत के स्नान की जैसा(पूर्णरूप से) स्नान करे,और नमाज़ के लिए जाए,गोया उसने एक उूंट का बली दिया,और जो व्यक्ति दूसरी घड़ी में जाए तो गोया उसने गाय का बली दिया,और जो व्यक्ति तीसरी घड़ी में जाए तो गोया उसने सींग वाले मेंढ़ा का बली दिया,और चौथी घड़ी में जाए तो गोया उसने एक मुर्गी का दान दिया और जो पांचवीं घड़ी में जाए तो गोया उसने एक अंडा अल्लााह के मार्ग में दान किया फिर जब इमाम उपदेश के लिए आजाता है तो देवदूत उपदेश सुनने के लिए मस्जिद में उपस्थित हो जाते हैं"[7]

6.जुमा की नमाज़ की एक विशेषता यह है कि जो इसको करने के लिए (मस्जिद आए ) उसके लिए इमाम के मिंबर पर आने से पूर्व(नफली) नमाज़ पढ़ना मुसतह़ब है,और ज़वाल के समय भी नमाज़ पढ़ना मकरूह है इसका प्रमाण अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वह ह़दीस है जिसके अभी अभी उल्लेख हुआ:"फिर उसके भाग में जितनी नमाज़ें हों उनको अदा करे" ।यह इमाम शाफेई रह़ीमहुल्लाह का कथन है जिसको इमाम इब्ने तैमिया रह़ीमहुल्लाहु ने भी अपनाया है।

7.जुमा की नमाज़ की सुन्नतों में यह भी है कि उपदेश के मध्य खामोश रहा जाए,पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है:"इमाम के उपदेश के मध्य यदि आपने अपने किसी साथी से खामोश रहने के लिए कहा तो आपने लग़व काम किया" ।[8]

8.जुमा की नमाज़ की एक विशेषता यह है कि उसको बजा लाने से इस जुमा और इससे पूर्व के जुमा के मध्य होने वाले पापों का **कफ्फारा** है जबतक कि बड़े पापों को न किया हो,इसका प्रमाण अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु की ह़दीस है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"पांचों नमाज़ें और प्रत्येक जुमा दूसरे जुमा तक के मध्य के पापों का **कफ्फारा** (उनको मिटाने वाले) हैं जब तक बड़े पापों को न किया जाए "[9]

अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"जिस व्यक्ति ने वजू किया और अच्छी तरह वजू किया,फिर जुमा के लिए आया और

---

[7] बोखारी:832,मुस्लिम:1403।

[8] बोखारी:934 और मुस्लिम:851 ने इस ह़दीस को अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से रिवायत किया है।

[9] मुस्लिम:233।

खामोशी के साथ गौर से उपदेश सुना,उसके लिए पूर्व जुमा से लेकर इस जुमा तक के पापों को क्षमा करदिया जाते हैं और तीन दिन दिन अधिक भी और जो(बिना किसी कारण) कंकरियों को हाथ लगाता रहा(उनसे खेलता रहा) उसने लग़व और फजूल काम किया" ।[10]

9.जुमा की नमाज़ की एक विशेषता दोनों रकअ़तों में सूरह अलजुमआ़ और सूरह अलमोनाफेकून अथवा सूरह अलआला और सूरह अलग़ाशिया का पढ़ना है।क्योंकि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन सूरतों को जुमा की नमाज़ में पढ़ते थे।[11] **इब्नुलकय्यिम** रहिमहुल्लाह ने जुमा के दिन दोनों सूरतों(जुमा व मोनाफेकून)के पढ़ने की निती ब्यान करते हुए फरमाया:"यह सूरह इस नमाज़(जुमा की नमाज़)को पढ़ने और के लिए जलदी करने,जुमा की नमाज़ में बाधा डालने वाले कार्यों को छोड़ने और अल्लाह का अधिक रूप से ज़िकर करने का आदेश पर निर्मित है,ताकि लोगों को दोनों संसार में सफलता प्राप्त हो क्योंकि अल्लाह के जिकर को भुला देना दुनिया एवं आखिरत में तबाही का कारण है,और दूसरी रकअ़त में सूरह"इज़ाजाअक अलमोनाफिकून"पढ़ी जाती है,ताकि मुस्लिम समुदाय को खतरनाक निफाक़ से डराया जाए,इस बात से अवज्ञत किया जाए कि लोगों के धन एवं संतान उन्हें जुमा की नमाज़ को पढ़ने और अल्लाह की जिकर से दूर न करदें,और यदि लोगों ने ऐसा किया तो निसंदेह उन्होंने हानी का सौदा किया।इसी प्रकार इस सूरह के सस्वरपाठ इस लिए की जाती है ताकि लोगों को अल्लाह के मार्ग में खर्च करने पर प्रोत्साहित किया जाए जो बड़े सौभाग्य की बात है।और लोगों को अचानक आकर्मण होने वाली मौत से अवज्ञत किया जाए इस स्थिती में कि लोग इससे मोहलत मांग रहे हों और वापसी की इच्छा कर रहे हों और उनकी मांग पर थोड़ा भी ध्यान न दी जाए।समाप्त।[12]

10.जुमा की नमाज़ की विशेषता यह भी है कि इसे छोड़ने पर ऐसी यातना आई है जो अ़सर की नमाज़ के अतिरिक्त किसी अन्य नमाज़ के प्रति नहीं आई है।अबू जाद ज़मीरी रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लाम ने फरमाया:"जो व्यक्ति बिना किसी धार्मिक बहाने के मामूली समझते हुए तीन जुमा लगातार छोड़दे तो अल्लाह तआ़ला उसके दिल पर मोहर लगादेता है" ।[13]

11.जुमा की नमाज़ की एक विशेषता यह भी है कि लोगों की गर्दनें छलांगने और जुमा की नमाज के बीच लग़व कामों में व्यस्त रहने के विष्य में कठोर (यातना) आई है क्योंकि इन गतिविधियों के कारण लोगों की खामोशी टूट जाती है और उपदेश के बीच लोग उपदेश सनने के बजाए बात करने में व्यस्त होजाते हैं।अब्दुल्लाह बिन अ़मर बिन अलआ़स रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लाम ने फरमाया:"जिसने लग़व कार्य किया

---

[10] मुस्लिम:857।

[11] मुस्लिम:877 ने इसको अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

[12] ज़ादुलमआ़द:425/3 आदि ने इसको वर्णित किया है और मुस्नद के शोधकर्ताओं ने इसको ह़सन कहा है:15498।

[13] इ़हमद:425/3 आदि ने इसको वर्णित किया है और मुस्नद के शोधकर्ताओं ने इसको ह़सन कहा है:15498।

और लोगों की गर्दनों को छलांगा तो ऐसा करने कारण उसको (जुमा के बजाए) ज़ोहर की नमाज़ का पुण्य मिलेगा"[14] अर्थात वह व्यक्ति जुमा के पुण्य से वंचित होगा।

जुमा की नमाज़ के लिए आने वाले लोगों पर खुशू व खुज़ू के साथ उसका सम्मान करना अनिवार्य है।क्योंकि यह अल्लाह तआ़ाला के महान शआ़एर में से है,इमाम के उपदेश के बीच शरीर के अंगों को बिना किसी कारण के हरकतों से रोके रखना,इसके सम्मान का भाग है,जैसे कंकर आदि छूना,भूमी पर लकीर खींचना और दातुन आदि।इसी प्रकार खामोशी अपनाना भी इसक सम्मान में शामिल है,अन्यथा वह पापी होगा,जुमा के पुण्य से वंचित होगा और उसकी जुमा की नमाज़ ज़ोहर में परिवर्तित होजाएगी।अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लाम ने फरमायाः"इमाम के उपदेश के बीच यदि तुमने अपने किसी साथी को खामोश रहने के लिए कहा तो तुमने लग़व कार्य किया"।[15]

12.जुमा की नमाज़ की विशेषता यह भी है कि उसके पढ़ने के पश्चात चार रकआ़त नफल नमाज़ पढ़ना मुसतह़ब है।अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित यह ह़दीस इस बात का प्रमाण है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लाम ने फरमायाः"जिस व्यक्ति ने जुमा की नमाज़ पढ़ी,उसे चाहिए कि उसके पश्चात चार रकअ़त नफल पढ़ले।"[16]

13.जुमा की नमाज़ की विशषताओं में वह भी शामिल है जिसे इमाम **इब्नुलकय्यिम** रह़ीमहुल्लाहु ने बयान किया हैः"जुमा की नमाज़ अन्य फरज़ नमाज़ों के मध्य ऐसी विशेषताओं से सशस्त्र है जो अन्य नमाज़ों में नहीं पाईजातीं जैसा कि सभा,विशेष संख्या,इक़ामत व शांति,देश में रहने और उच्च स्वर में सस्वरपाठ करने की शर्तें"।[17]समाप्त।
ए अल्लाह के बंदो!यह दस एसी विशेषताएं हैं जिनके कारण जुमा की नमाज़ अन्य नमाज़ों से अति उत्कृष्ट होती है और अल्लाह के निकट उच्च स्थान एवं प्रतिष्ठा से सम्मानित होती है।अतःहमें इन विशेषताओं को अपनाने के लिए अल्लाह से सहायता प्राप्त करनी चाहिए और इन कार्यों पर अल्लाह से पुण्य की आशा रखनी चाहिए।

अल्लाह तआ़ाला हमें और को कुरान की बरकतें प्रदान करे,मुझे और आप को इसकी आयतों और ह़िकमत(निती) पर आधारित प्रामर्शों से लाभ पहुचाए,में अल्लाह से अपने लिए और आप सबके लिए क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा करने वाला अति कृपा करने वाला है।

---

[14] अबूदाउूदः347 ने इसको वर्णित किया है और सह़ी अबूदाउूद में अल्लामा अल्बानी रहिमहुल्लाहु ने इसका ह़सन कहा है।
[15] इसे बाखारीः934 और मुस्लिमः851 ने अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

[16] मुस्लिमः881।
[17] ज़ादुलमआ़दः397/1।

**द्वितीय उपदेशः**

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد:

- आप यह जानलें...अल्लाह आप पर कृपा कर...कि अल्लाह तआ़ला ने आपको यह आदेश दिया है कि जिस का प्रारंभ अपनी जात से किया,फिर अल्लाह की पवित्रता बयान करने वाले देवदूतों को इस का आदेश दिया और उसके पश्चात मनुष्य एवं जिनों के समस्त मुसलमानों को आदेश देते हुए फरमायाः

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

अर्थातःअल्लाह तआ़ला और उसके देवदूत उस नबी पर रह़मत भेजते हैं,ए ईमान वालो!तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

ए अल्लाह! तू अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्माद पर रह़मत एवं शांति भेज,तू उनके उत्तराधिकारियों,अनुयाईयों और क़ेयामत तक नेकनीयती के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

हे अल्लाह! इसलाम और मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहूदेववाद एवं बहूदेववादियों को अपमानित कर,तू अपने और इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नष्ट करदे,और अपने एकेश्वरवादी बंदों की सहायता फरमा।

हे अल्लाह तू हमें हमारे देशों में शांति प्रदान कर,हमारे इमामों और हमारे हाकिमों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक और हिदायत पर चलने वाला बना।

हे अल्लाह!समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने,अपने धर्म को उच्च करने की तौफीक प्रदान कर और उन्हें अपने प्रजाओं के प्रति कृपा का कारण बना दे।

हे अल्लाह!मुसलमानों को आपदा किस कठोरता से घेरे हुआ है उसको तेरे अतिरिक्त कोई नहीं जानता,हे अल्लाह!हमसे इस महामारी को दूर करदे,निसंदेह हम मुसलमान हैं,हे अल्लाह!इस महामारी के कारण जिन मुसलमानों की मृत्यु होगई है,उनपर कृपा फरमा,और हम में से जो रोगी हैं,उन्हें स्वास्थ्य प्रदान कर,हे अल्लाह हम तेरी शर्ण चाहते हैं तेरी नेमत के समाप्ति से,तरे कृपा के हट जाने से,तेरे अचानक यातना से और तेरी प्रत्येक प्रकार की नाराजगी से। हे अल्लाह हम तेरी पनाह चाहते हैं कुष्ठ रोग से,पागलपन से,कोढ़ से और बूरे रोग से। हे हमारे पालनहार!हमें नेकी दे और आखेरत में अच्छाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

عباد الله! إن الله يأمر بالعدل والإحسان وإيتاء ذي القربى، وينهى عن الفحشاء والمنكر والبغي، يعظكم لعلكم تذكرون، فاذكروا الله العظيم يذكركم، واشكروه على نعمه يزدكم، ولذكر الله أكبر، والله يعلم ما تصنعون.

**लेखकः**
मजिद बिन सुलेमान अलरसी
२६ शौवाल १४४१ हिजरी
जूबैल, सउूदी अ़रब
**अनुवादः**
फैजुर रह़मान हिफजुर रह़मान तैमी
००९६६५०५९०६७६१